1

12
ربیع الاول
1432ھ

Research Paper 7

16
February
2011

بسم الله الرحمن الرحيم و الصلوة والسلام على رسول الله و على ازواجه و اله و اصحابه اجمعين الى يوم الدين

# कुरआन-ए-हकीम के 10 बुनियादी अहकाम

**अल्लाह की तमाम इल्हामी किताबों का खुलासा यही 10 बुनियादी अहकाम (commandments) है**

(सुरह बनी इस्राईल आयात 23 से 39)
[ سُورة بنی اسرآئیل : 23 تا 39 ]

---

1 وَقَضَىٰ رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ.. ﴿इसी का अहद का इआदह हम अपनी हर नमाज़ में भी करते है: إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ﴾

1 और तुम्हारे रब ﷻ ने हुक्म दिया था कि उसके सिवा किसी की इबादत मत करना। ﴿अल्लाह ﷻ के लिए नमाज़ और सिर्फ उस ही से दुआ﴾

2 ......وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا ۚ إِمَّا يَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ أَحَدُهُمَا أَوْ كِلَاهُمَا فَلَا تَقُلْ لَهُمَا أُفٍّ وَلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَهُمَا
قَوْلًا كَرِيمًا O وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيَانِي صَغِيرًا O رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَا فِي
نُفُوسِكُمْ ۚ إِنْ تَكُونُوا صَالِحِينَ فَإِنَّهُ كَانَ لِلْأَوَّابِينَ غَفُورًا O

2 और माँ बाप के साथ अच्छा सलूक करना और अगर तेरी ज़िन्दगी में, उन में से कोई एक या दोनों बुढ़ापे को पहुँच जाए तो उन को उफ़ तक मत कहना और उन्हें मत झिड़कना और उन से बात बड़ी ताजीम से करना और उनके लिए अपने कंधे मुहब्बत और इन्किसरी से झुका देना और अर्ज़ करना " ऐ मेंरे रब ﷻ इन दोनों पे रहम फरमा जिस तरह इन्होने मुझे बचपन में पाला था | तुम्हारा रब बेहतर जानता है जो कुछ तुम्हारे दिलों में है. अगर तुम नेक किरदार होगे (अपने वालिदैन के हक में) तो बेशक वो तौबा करने वालो को माफ़ फरमाने वाला है

3 وَآتِ ذَا الْقُرْبَىٰ حَقَّهُ وَالْمِسْكِينَ وَابْنَ السَّبِيلِ وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيرًا O إِنَّ الْمُبَذِّرِينَ كَانُوا إِخْوَانَ الشَّيَاطِينِ ۖ
وَكَانَ الشَّيْطَانُ لِرَبِّهِ كَفُورًا O وَإِمَّا تُعْرِضَنَّ عَنْهُمُ ابْتِغَاءَ رَحْمَةٍ مِنْ رَبِّكَ تَرْجُوهَا فَقُلْ لَهُمْ قَوْلًا مَيْسُورًا O وَلَا
تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُولَةً إِلَىٰ عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ فَتَقْعُدَ مَلُومًا مَحْسُورًا O إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ
وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا O

3 और देना रिश्तेदार को उसका हक और मिस्कीन और मुसाफिर को भी, और फिज़ूलखर्ची मत करना और फिज़ूलखर्ची करने वाले शैतानो के भाई है, और शैतान अपने रब का बड़ा नाशुक्रा है, और अगर (तंगदस्ती की वजह से) तुझे उन से मुह फेरना पड़े और तुम खुद अपने रब ﷻ की रहमत (खुशहाली) के मुतलाशी हो जिसकी तुम्हे उम्मीद है (तो कम अज़ कम) उन से बात ही नरमी से करना, और न बनाना अपने हाथ को अपनी गर्दन से बंधा हुआ (कंजूसी से) और न ही उसको बिलकुल खोल देना (फराखदिली से )की आखिरकार बैठ जाओ मलामत ज़दा हुए दरमान्दा, बेशक तुम्हारा रब ﷻ कुशादा कर देता है रोज़ी जिसके लिए चाहता है और तंग कर देता है (जिसके लिए चाहता है ) बेशक वो अपने बन्दों से आगाह है उन्हें देखने वाला है .

4 وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ خَشْيَةَ إِمْلَاقٍ ۖ نَحْنُ نَرْزُقُهُمْ وَإِيَّاكُمْ ۚ إِنَّ قَتْلَهُمْ كَانَ خِطْئًا كَبِيرًا O

4 और अपनी औलाद को मुफलिसी (गरीबी) के डर से कत्ल मत करना, हम ही रिज़क देते है उन्हें भी और तुम्हे भी | बेशक उनको कत्ल करना बहुत बड़ा गुनाह है.

5 وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰىٓ اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً ؕ وَسَآءَ سَبِيْلًا ○

5 और ज़िना और बदकारी के करीब भी मत जाना (खवा वो किसी भी शक्ल में हो) और बेशक ये बड़ी बेहयाई है और बहुत ही बुरी राह है।

6 وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِىْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ ؕ وَمَنْ قُتِلَ مَظْلُوْمًا فَقَدْ جَعَلْنَا لِوَلِيِّهٖ سُلْطٰنًا فَلَا يُسْرِفْ فِّى الْقَتْلِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ مَنْصُوْرًا ○

6 और मत कत्ल करना उस जान को जिसे कत्ल करना अल्लाह ﷻ ने हराम कर दिया है मगर हक के साथ (यानी किसास वगैरह की सूरत में) और जिसे नाहक कत्ल किया जाए तो हमने उसके वारिस को हक दिया है (किसास का), पस कत्ल में इसराफ नहीं किया जाए और ज़रूर उसकी (वारिस की) मदद की जाएगी।

7 وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِىْ هِىَ اَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۪ وَاَوْفُوْا بِالْعَهْدِ ۚ اِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْـُٔوْلًا ○

7 और मत करीब जाना (खसूसन) यतीम के माल के मगर उस तरीका से जो बेहतर हो (यतीम के हक में) यहाँ तक की वो अपनी जवानी को पहुँच जाए और पूरा करना अपने अहद को (खसूसन यतीम के माल की हिफाज़त के मुतालिक ) बेशक अहद के बारे में तुम से पूछ होगी ।

8 وَاَوْفُوا الْكَيْلَ اِذَا كِلْتُمْ وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيْمِ ؕ ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّاَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ○

8 और पूरा पूरा मापना जो तुम मापने लगो, और जब तौलना तो सीधे तराज़ू के साथ, और यही तुम्हारे लिए बेहतर और अंजाम के लिहाज़ से अच्छा है।

9 وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ؕ اِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ اُولٰٓئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْـُٔوْلًا ○

9 और मत पैरवी करना उस चीज़ की जिसका तुमको इल्म नहीं है, बेशक कान, आँख और अक्ल इन सब के (इस्तेमाल के) मुतालिक तुम से पूछ होगी।

10 وَلَا تَمْشِ فِى الْاَرْضِ مَرَحًا ۚ اِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْاَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُوْلًا ○

10 और मत चलना ज़मीन में अकड़ते हुए, (इस तरह) न तो तुम चीर सकते हो ज़मीन को और न ही पहुँच सकते हो पहाड़ो के बराबर बुलन्दी में

## आख़री नसीहत

وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتُلْقٰى فِىْ جَهَنَّمَ مَلُوْمًا مَّدْحُوْرًا ○

सब (बयां करदा कामो) की ये बुराई तेरे रब को (सख्त) नपसंद है, ये है (वो हिदायत) जो बज़रिया ए वही आपका रब आपकी तरफ हिकमत की बातो में से भेजता है,(ऐ हर सुनने वाले इन्सान याद रख) अल्लाह ﷻ के साथ किसी को माबूद (पूज्य) मत बनाना, वरना (याद रख, शिर्क करने की सज़ा में) तुझे जहन्नम में फ़ेक दिया जाएगा, मलामतज़दा हालत में धक्के देते हुए।

12 ربیع الاول 1432ھ

بسم الله الرحمن الرحيم والصلوة والسلام على رسول الله و على ازواجه و اله واصحابه اجمعين الى يوم الدين

16 February 2011

# कुरआन व सुन्नत रिसर्च एकेडमी ®

❶ وَمَنْ يَّبْتَغِ غَيْرَ الْاِسْلَامِ دِيْنًا فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْهُ ۚ وَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ○ [آل عمران : 85]

**तर्जुमा आयत-ए-मुबारका :** और जो कोई (दुनिया की जिन्दगी में) इस्लाम के अलावा किसी और दीन को इख्तियार करेगा तो ऐसे शख्स से (उसका दीन) हरगिज कुबूल नहीं किया जाएगा। और वह आखिरत में खसारा पाने वालों में से हो जाएगा। (आले इमरान: 85)

❷ اِنَّ الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا دِيْنَهُمْ وَكَانُوْا شِيَعًا لَّسْتَ مِنْهُمْ فِيْ شَيْءٍ ۭ اِنَّمَآ اَمْرُهُمْ اِلَى اللّٰهِ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ○ [الانعام : 159]

**तर्जुमा आयत-ए-मुबारका :** बेशक जिन्होंने अपने दीन में फिर्के बनाए और गिरोहों में बट गये आप (रसूल ﷺ) का उनसे कोई ताल्लुक़ नहीं है, उनका मामला अल्लाह ﷻ के सुपुर्द है, फिर वह (अल्लाह ﷻ कयामत के दिन) उन (फिर्का बाजों) को उनके करतूत बता देगा। (अल अनाम: 159)

❸ وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا وَّلَا تَفَرَّقُوْا ......... ○ [آل عمران : 103]

**तर्जुमा आयत-ए-मुबारका :** और तुम सब मिलकर अल्लाह ﷻ की रस्सी (कुरआन) को मजबूती से थाम लो। और आपस में फिर्कों में मत तक़सीम हो जाओ। (आले इमरान: 103)

❹ **तर्जुमा सहीह हदीस:** ऐ लोगों आगाह हो जाओ! मैं भी इन्सान हूँ, करीब है कि मेरे पास मेरे रब का कासिद(मौत का फरिश्ता)आए और में उसकी बात कुबूल कर लूँ। मैं अपने बाद तुम में दो अज़ीम चीजे छोड़ कर जा रहा हूँ: Ⅰ पहली चीज तो अल्लाह ﷻ की किताब (कुरआन) है, इसमें हिदायत और नूर है, तुम अल्लाह ﷻ की किताब को पकड़ो और उससे ताल्लुक मजबूत करो। अल्लाह ﷻ की किताब अल्लाह ﷻ की रस्सी है, जिसने उसकी इत्तबा की वह हिदायत पर है और जिसने उसे छोड़ दिया वह गुमराह हो गया। Ⅱ दूसरी चीज़ मेरे अहले बैअत हैं। मैं अपने अहले बैत के मुताल्लिक तुम्हें अल्लाह ﷻ से डराता हूँ। (उनसे अच्छा बर्ताव करना) (सहीह मुस्लिम "किताबुल फजाइल" हदीस न॰ 6228) [صحیح مُسلم "کتابُ الفضائل" حدیث نمبر 6228]

**नोट:** नबी ﷺ ने अपना वसीअ (वसिय्यत किया गया खलीफा) "कुरआन" को बनाया था: (सहीह बुखारी "किताबुल मगाजी" हदीस न॰ 4460) [صحیح بُخاری "کتابُ المغازی" حدیث نمبر 4460]

❺ **तर्जुमा आयत-ए-मुबारका :** बेशक मैं अपने बाद तुम में दो ऐसी अज़ीम चीजें छोड़कर जा रहा हूँ कि अगर उन्हें मजबूती से पकड़ लोगे तो कभी गुमराह नहीं होगे: Ⅰ अल्लाह ﷻ की किताब(कुरआन)और Ⅱ उसके रसूल ﷺ की सुन्नत (जो सहीह अहदीस ही से माखूज़ हो)। (अल मोत्ता लिल मालिक "किताबुल कद्र" हदीस न॰ 1628, अल मुस्तदरक लिल हाकिम "किताबुल इल्म" हदीस न॰ 318) [الموطاء لِلما لک "کتابُ القدر" حدیث نمبر 1628 ، المُستدرک لِلحاکم "کتابُ العلم" حدیث نمبر 318]

❻ "इज्माअ-ए-उम्मत" को हुज्जत और दलील मानना दरहकीकत कुरआन व सहीह अहदीस के अहकाम की पैरवी करने में ही शामिल है: (सूरतुन्निसा: आयत न॰115), (अलमुस्तद्रक लिल हाकिम "किताबुल इल्म" हदीस न॰ 399) [سورۃ النساء : آیت نمبر 115] ، [المُستدرک لِلحاکم "کتابُ العلم" حدیث نمبر 399]

❼ अगर कुरआन व सुन्नत (सहीह हदीस) और इज्माअ-ए-उम्मत की मुखालफत ना आए तो जदीद मसाइल के हल के लिये "कयास या इज्तिहाद" करना जायज है: (अल मुसन्नफ लिइब्ने अबी शैबह "किताबुल बुयू वल अकजिया" (कौले सय्यदना उमर رضی اللہ عنہ) हदीस न॰ 22, 990) [المُصنف لابن ابی شیبة "کتابُ البیوع والاقضیة" (قولِ سیدنا عمر رضی اللہ عنہ) حدیث نمبر 22,990]

**हफ्तावार कुरआन क्लास** रिसर्च एकेडमी में हर हफ्ते को इशा की नमाज के फौरन बाद **55 मिनट** कुरआन का तर्जुमा व तफ्सीर क्लास होती है। । क्लास के बाद सवाल व जवाब की खुसूसी नशिस्त भी होती है। **तमाम मकतबे फिक्र** से ताल्लुक रखने वाले हमारे भाइयों को दावत-ए-आम है।

12 ربیع الاول 1436ھ

بسم الله الرحمن الرحيم والصلوة والسلام على رسول الله و على ازواجه و اله و اصحابه اجمعين الى يوم الدين

04 January 2015

# जादू टोंने, वबाई अमराज़ और क़ुदरती हादसात से बचाव के लिए सहीह सुन्नत वज़ाईफ़

मुर्शिदी कामिल, इमाम उल अंबियां ﷺ की सहीह अहादीस के नम्बर्स उलेमाएं हरमैन और बैरुत के जारी शुदा इंटरनेशनल नंबरिंग के मुताबिक है.

---

**1** आयातुल कुर्सी पढ़ने वाला शैतान और जिन्नात से महफ़ूज़ हो जाता है और अल्लाह उसकी हिफाज़त के लिये एक मुहाफ़िज़ मुक़र्रर फरमा देता है.

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ ......................................... وَهُوَ الْعَلِیُّ الْعَظِیْمُ O

1 मर्तबा सुबह और शाम — [بُخاری : 2311 ، السُّنن الکُبریٰ لِلنسائی : 8017 ، المُستدرك لِلحاکم : 2064]

**2** मुअव्विज़ात की तिलावत हर शै से काफी हो जाती है, ये 3 तीन सूरतें शैतान, जिन्नात और जादू के खिलाफ अल्लाह की पनाह में आने का ज़रिया है.

❶ قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ O... ❷ قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ O... ❸ قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ O...

तीनों 3 मर्तबा सुबह और शाम — [جامع ترمذی :3575 ، سُنن ابی داؤد : 5082 ، سُنن نسائی : 5429]

**3** इन क़लिमात का सवाब 4 गुलाम आज़ाद करने के बराबर है और अल्लाह तमाम दिन और रात में हर ख़तरनाक चीज़ और शैतान से बचाव फरमा देता है.

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِیْكَ لَهٗ ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ

**तर्जुमा:** अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला हैं, उसका कोई शरीक़ नहीं, उसी के लिए तमाम बादशाहत है और उसी के लिए ही तमाम तारीफ़ है, और वह हर शै पर मुक़म्मल क़ुदरत रखता है.

10 मर्तबा सुबह और शाम — [مُسلم : 6844 ، سُنن ابی داؤد : 5077 ، سُنن ابن ماجه : 3867]

(اِنشاء اللهﷻ)

**4** ये दुआ पढ़ने वाले को न तो कोई शै नुक्सान पहुँचा सकती है, और न ही कोई नागहानी आफ़त और मुसिबत ही उसे पहुचेगी .

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِیْ لَا یَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَیْءٌ فِی الْاَرْضِ وَلَا فِی السَّمَآءِ وَهُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ

**तर्जुमा:** अल्लाह के नाम के साथ, जिसके नाम (की बरकत) से ज़मीन व आसमान में कोई चीज़ नुक्सान नहीं पंहुचा सकती, और वही सुनने वाला जानने वाला है.

3 मर्तबा सुबह और शाम — [جا مع ترمذی : 3388 ، سُنن ابی داؤد : 5088 ، سُنن ابن ماجه : 3869]

(اِنشاء اللهﷻ)

**5** ये दुआ पढ़ने वाले को ज़हरीले जानवर (मस्लन बिच्छु, साँप, कीड़ो और मच्छर वगैरह) का डंक नुक्सान नहीं पंहुचा सकेगा.

اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّآمَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ

[مُسلم :6880 ، مُسندِ احمد : 7885 ، 290/2]

3 मर्तबा सुबह और शाम — **तर्जुमा:** मैं अल्लाह के कलिमाती कामीलह के साथ (अल्लाहﷻ की) पनाह पकड़ता हूँ हर उसी चीज़ के शर से जो उसने पैदा की.

**नोट** अल्लाह ﷻ की **"हम्द"** और उसके महबूब ﷺ पर **"दरुद शरीफ़"** पढ़ना, हमारी दुआओं की क़ुबुलियत का बेहतरीन ज़रिया है — [جا مع ترمذی : 593]